

समयदान ही युग-धर्म: एक तार्किक और आध्यात्मिक विश्लेषण

मानव जीवन के उद्देश्य, सही दिशा और युग-निर्माण का वैज्ञानिक खाका

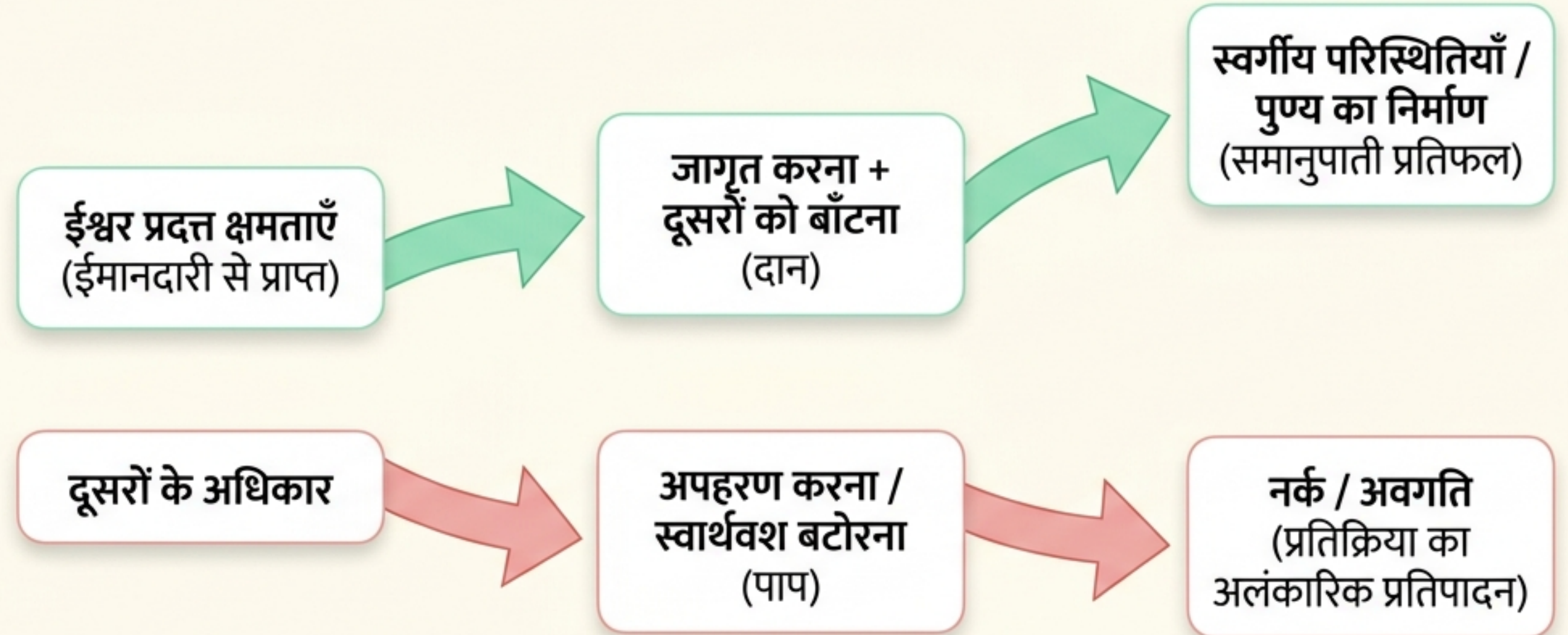


वसन्त पंचमी १९९० को वन्दनीया माताजी से — “मेरा ज्ञान शरीर ही जिन्दा रहेगा। ज्ञान शरीर का प्रकाश जन-जन के बीच में पहुँचना ही चाहिए और आप सबसे कहियेगा — सब बच्चों से कहियेगा कि मेरे ज्ञान शरीर को मेरे क्रान्तिधर्मी साहित्य के रूप में जन-जन तक-जन तक पहुँचाने का प्रयास करें।” — पूज्य गुरुदेव युगऋषि वेदमूर्ति तपोनिष्ठ पण्डित श्रीराम शर्मा आचार्य (गायत्री परिवार के संस्थापक)

दान का विज्ञान: प्रकृति का शाश्वत 'क्रिया-प्रतिक्रिया' नियम

वसन्त पंचमी १९९० को
वन्दनीया माताजी से —
“मेरा ज्ञान शरीर ही
जिन्दा रहेगा। ज्ञान शरीर
का प्रकाश जन-जन के
बीच में पहुँचना ही चाहिए
और आप सबसे कहियेगा —
सब बच्चों से कहियेगा कि
मेरे ज्ञान शरीर को मेरे
क्रान्तिधर्मी साहित्य के रूप
में जन-जन तक पहुँचाने
का प्रयास करें।”

— पूज्य गुरुदेव
युगऋषि वेदमूर्ति तपोनिष्ठ
पण्डित श्रीराम शर्मा आचार्य
(गायत्री परिवार के संस्थापक)



न्यूटन के तीसरे नियम की तरह, आध्यात्मिक जगत में 'देना' और 'पाना' समानुपाती (Proportional) है। जो जितना बोता है, वह उसी अनुपात में काटता है।

धनदान बनाम प्रतिभादान: एक तुलनात्मक मैट्रिक्स

धनदान (प्रतीकात्मक दान)

- प्रकृति: बाहरी और भौतिक साधन।
- सुलभता: केवल सीमित भौतिक पुरुषार्थ का फल।
- जोखिम: दुरुपयोग संभव है (अहंकार या टैक्स बचाने का माध्यम)।
- प्रभाव: विपरीत परिणाम या प्रमाद बढ़ा सकता है।

प्रतिभा / समयदान (वास्तविक दान)

- प्रकृति: आंतरिक और आत्मिक संपदा।
- सुलभता: ईश्वर द्वारा सबको समान रूप से (२४ घंटे) प्रदत्त।
- जोखिम: सदुपयोग निश्चित है; इसमें शोषकों द्वारा दुरुपयोग असंभव।
- प्रभाव: सीधा समाज-निर्माण और प्राणों की ऊष्मा का संचार।

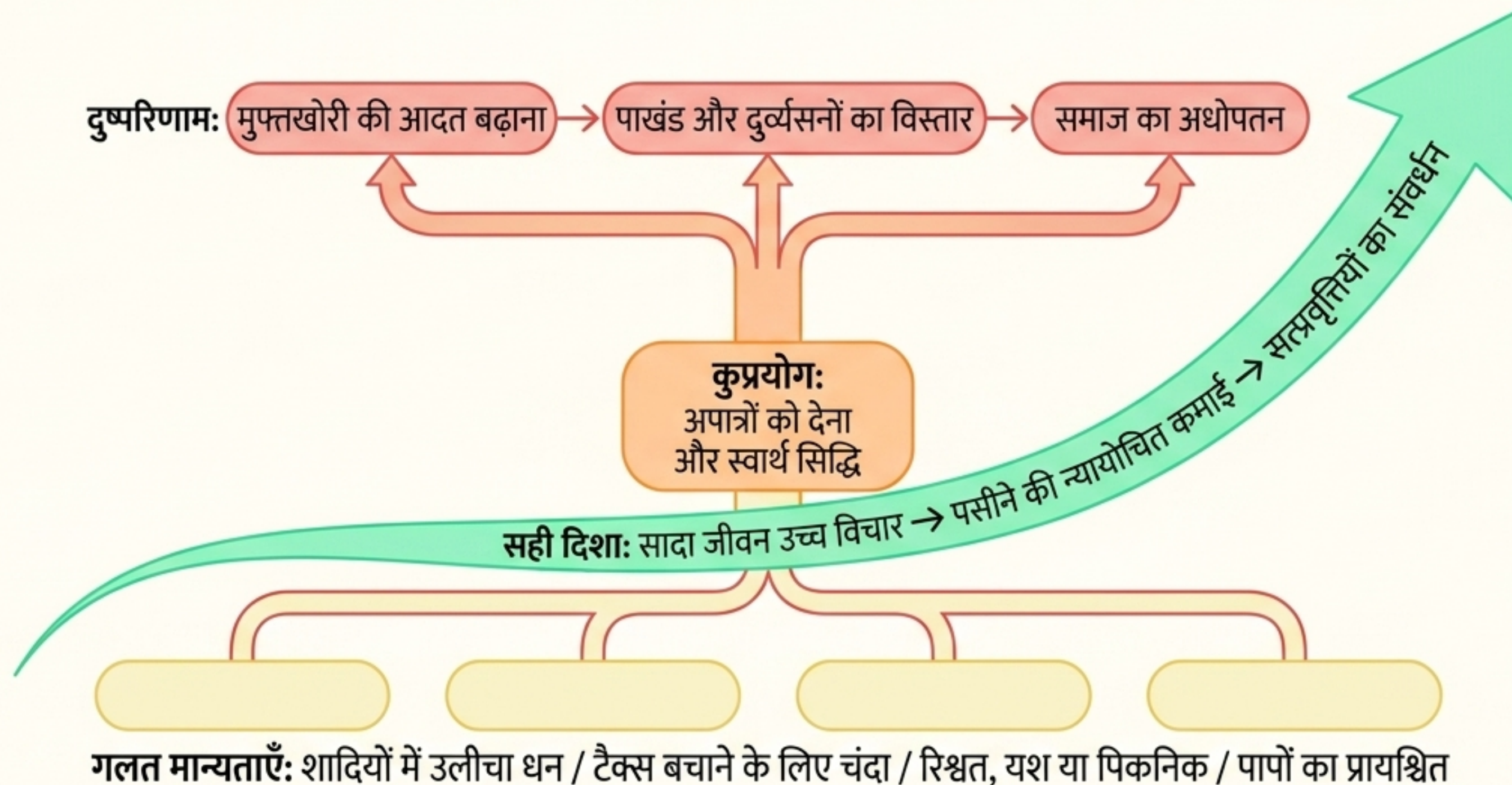
निष्कर्ष: धन भौतिक पुरुषार्थ का फल है, लेकिन 'समय' जीवन की स्वयं शृंखला है।

वसन्त पंचमी १९९० को वन्दनीया माताजी से –
“मेरा ज्ञान शरीर ही जिन्दा रहेगा। ज्ञान शरीर का प्रकाश जन-जन के बीच में पहुँचना ही चाहिए और आप सबसे कहियेगा – सब बच्चों से कहियेगा कि मेरे ज्ञान शरीर को मेरे क्रान्तिधर्मी साहित्य के रूप में जन-जन तक पहुँचाने का प्रयास करें।”

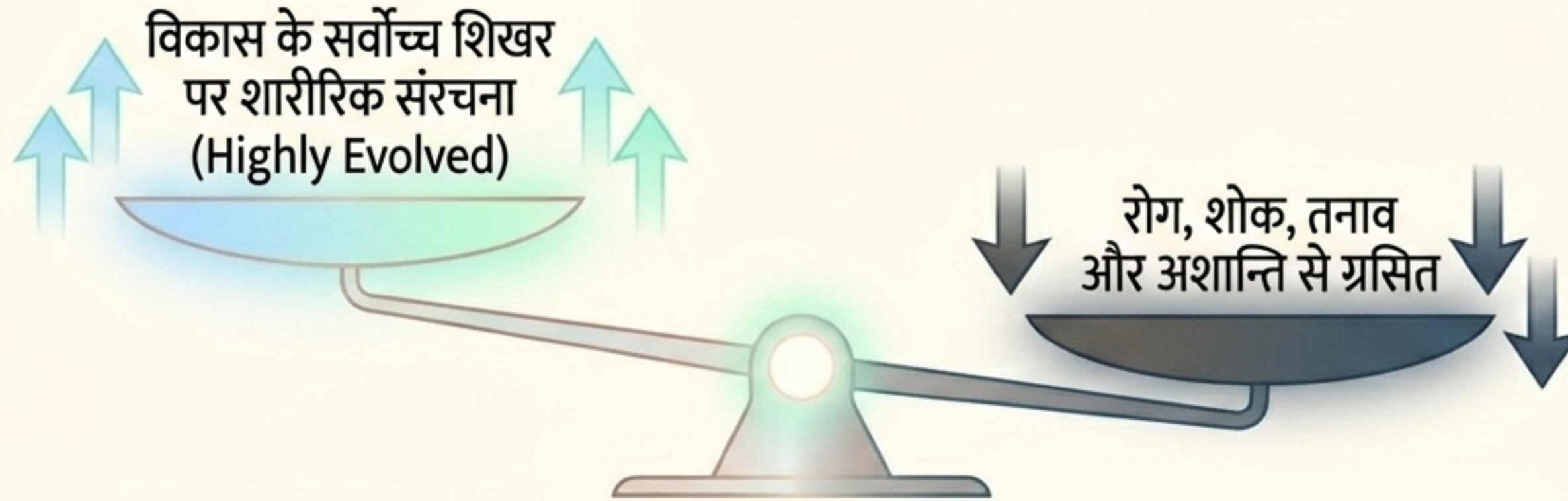
— पूज्य गुरुदेव युगऋषि वेदमूर्ति तपोनिष्ठ पण्डित श्रीराय शर्मा आचार्य (गायत्री परिवार के संस्थापक)

वसन्त पंचमी १९९० को वन्दनीया माताजी से — “मेरा ज्ञान शरीर ही जिन्दा रहेगा। ज्ञान शरीर का प्रकाश जन-जन के बीच में पहुँचना ही चाहिए और आप सबसे कहियेगा — सब बच्चों से कहियेगा कि मेरे ज्ञान शरीर को मेरे क्रान्तिधर्मी साहित्य के रूप में जन-जन तक पहुँचाने का प्रयास करें।” — पूज्य गुरुदेव युगऋषि वेदमूर्ति तपोनिष्ठ पण्डित श्रीराम शर्मा आचार्य (गायत्री परिवार के संस्थापक)

समाज में ‘दान’ की वर्तमान भ्रांतियों का रोग-निदान



मानव जीवन का विरोधाभास: उन्नत जीवविज्ञान बनाम उलझा मनोविज्ञान



वासना + तृष्णा + अहंता

(मकड़ी के जाले की तरह जकड़न)

असीमित आवश्यकताएँ

निरंतर भागदौड़ व क्लेश

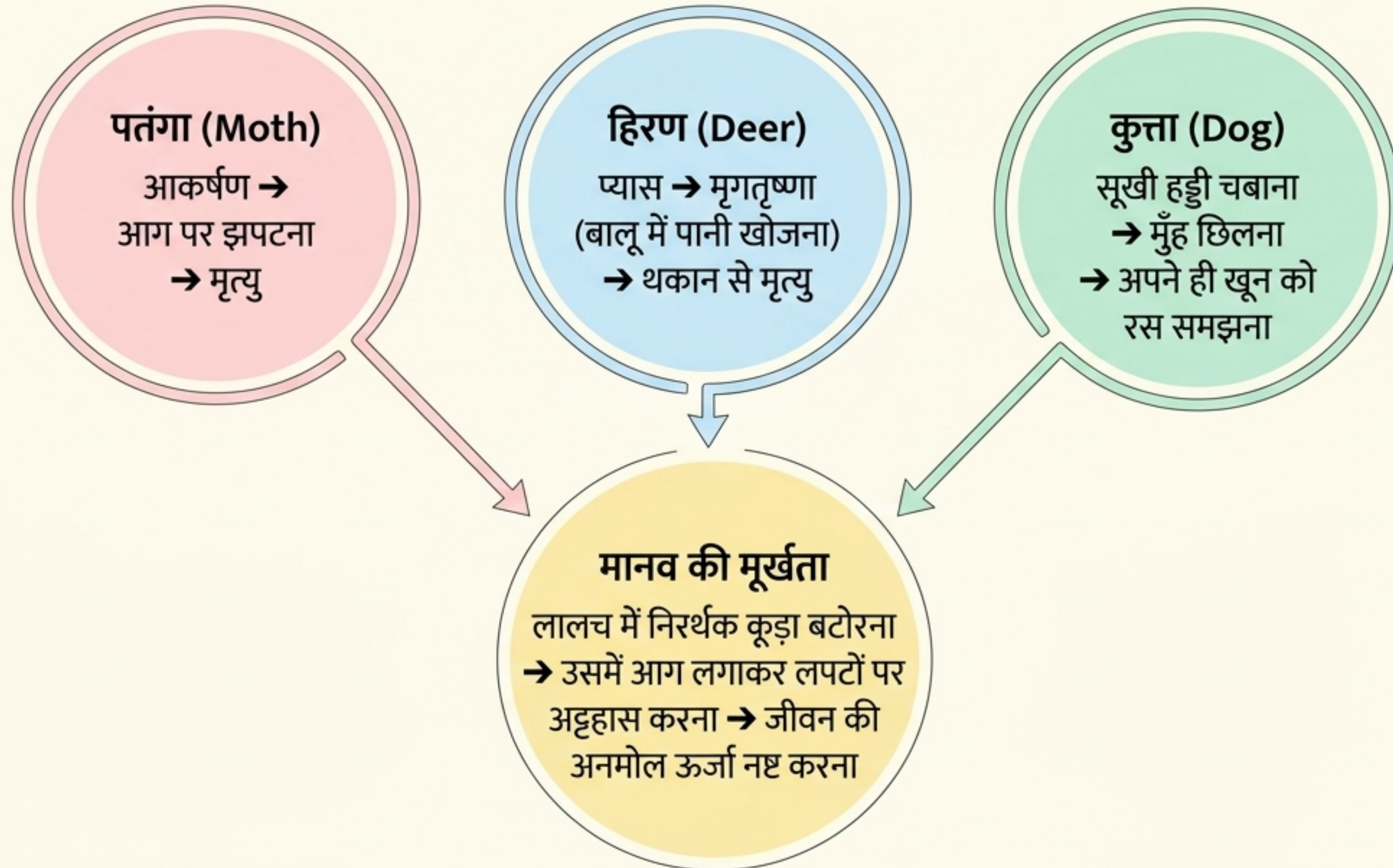
स्वाभाविक आवश्यकताएँ (स्वल्प)

(स्व-उत्पादन क्षमता पर विश्वास)

प्रसन्नता, प्रफुल्लता और संतुष्टि

वसन्त पंचमी १९९० को वन्दनीया माताजी से — “मेरा ज्ञान शरीर ही जिन्दा रहेगा। ज्ञान शरीर का प्रकाश जन-जन के बीच में पहुँचना ही चाहिए और आप सबसे कहियेगा — सब बच्चों से कहियेगा कि मेरे ज्ञान शरीर को मेरे क्रान्तिधर्मी साहित्य के रूप में जन-जन तक पहुँचाने का प्रयास करें।” — पूज्य गुरुदेव युगऋषि वेदमूर्ति तपोनिष्ठ पण्डित श्रीराम शर्मा आचार्य (गायत्री परिवार के संस्थापक)

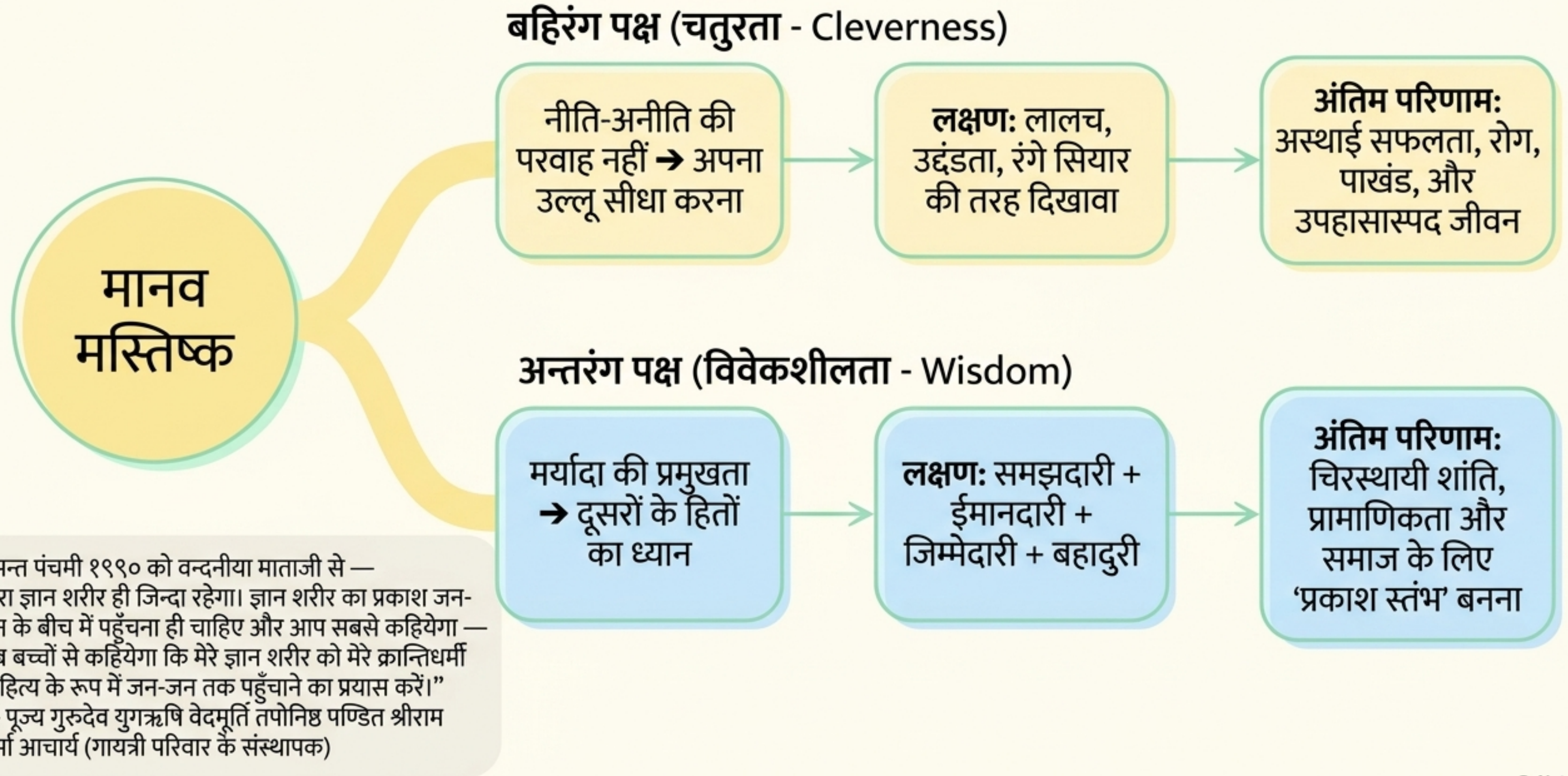
उल्टी बुद्धि का सिंड्रोम: प्रकृति में आत्मघात के दृष्टांत



वसन्त पंचमी १९९० को
वन्दनीया माताजी से —
“मेरा ज्ञान शरीर ही
जिन्दा रहेगा। ज्ञान शरीर
का प्रकाश जन-जन के
बीच में पहुँचना ही
चाहिए और आप सबसे
कहियेगा — सब बच्चों से
कहियेगा कि मेरे ज्ञान
शरीर को मेरे क्रान्तिधर्मी
साहित्य के रूप में जन-
जन तक पहुँचाने का
प्रयास करें।”

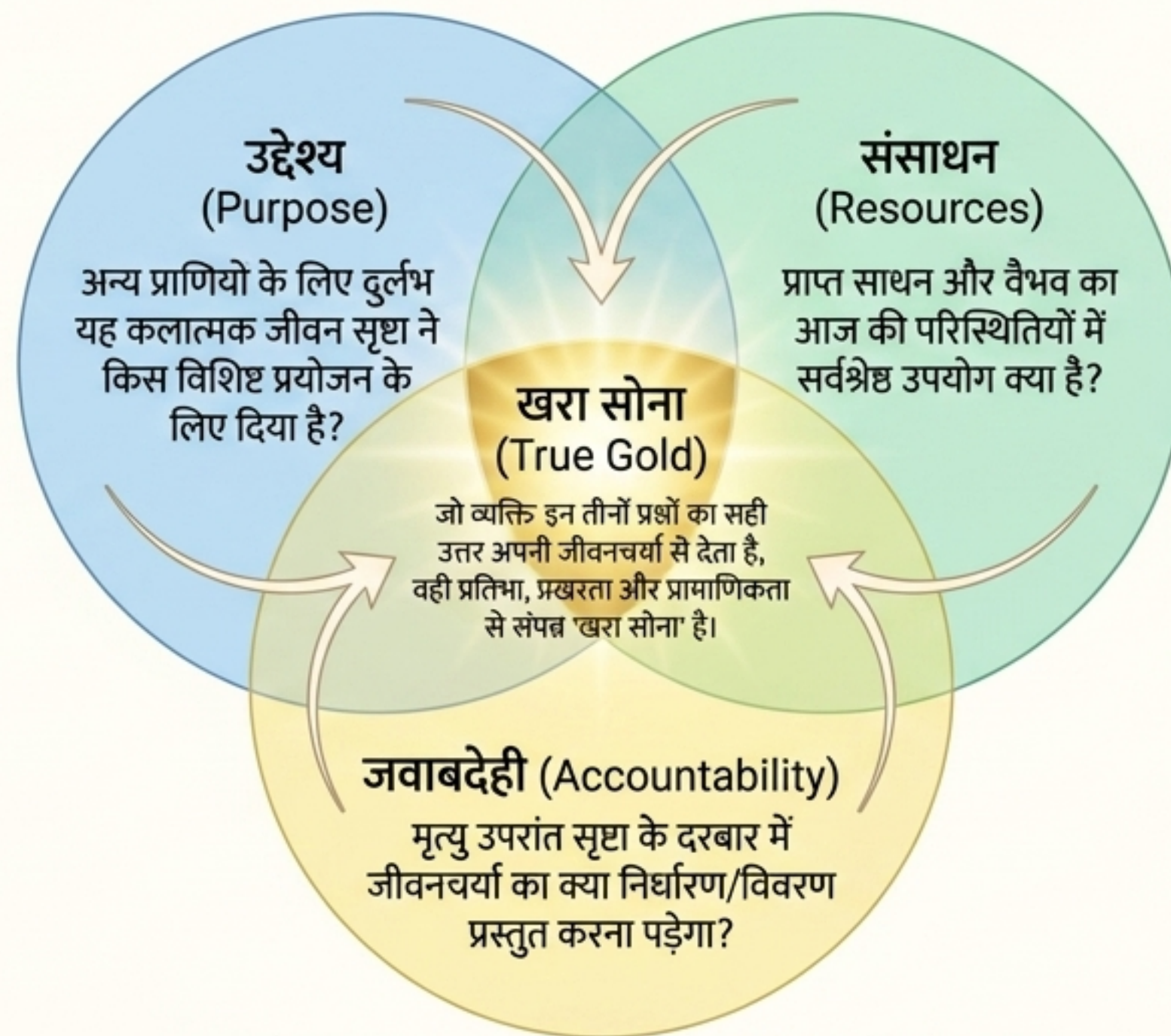
— पूज्य गुरुदेव
युगऋषि वेदमूर्ति तपोनिष्ठ
पण्डित श्रीराम शर्मा आचार्य
(गायत्री परिवार के संस्थापक)

चतुरता बनाम बुद्धिमत्ता: एक डायग्नोस्टिक ट्री



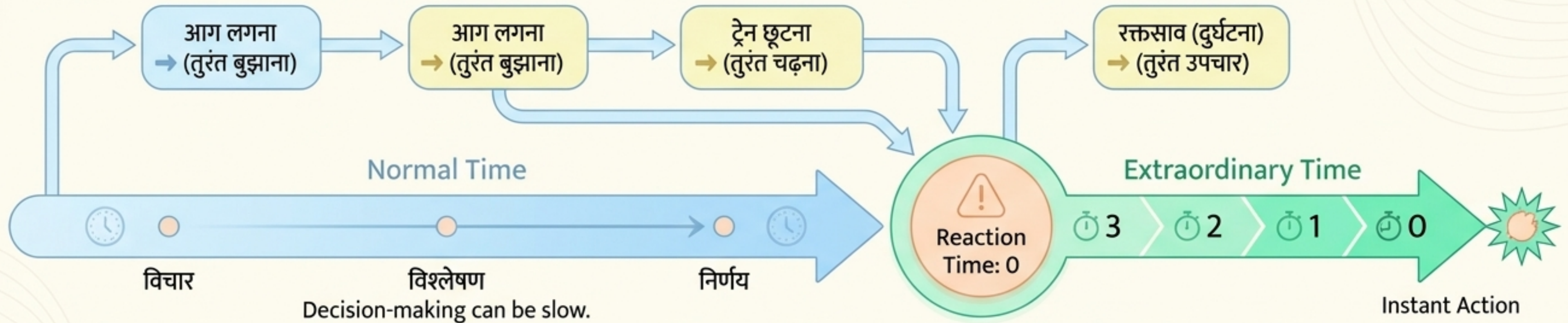
वसन्त पंचमी १९९० को वन्दनीया माताजी से — “मेरा ज्ञान शरीर ही जिन्दा रहेगा। ज्ञान शरीर का प्रकाश जन-जन के बीच में पहुँचना ही चाहिए और आप सबसे कहियेगा — सब बच्चों से कहियेगा कि मेरे ज्ञान शरीर को मेरे क्रान्तिधर्मी साहित्य के रूप में जन-जन तक पहुँचाने का प्रयास करें।”
— पूज्य गुरुदेव युगऋषि वेदमूर्ति तपोनिष्ठ पण्डित श्रीराम शर्मा आचार्य (गायत्री परिवार के संस्थापक)

मानव चेतना के ३ शाश्वत प्रश्न: खरे सोने की कसौटी



अवसर प्रमाद का नहीं: तात्कालिकता (Urgency) का विज्ञान

सामान्य समय में निर्णय धीमे हो सकते हैं, लेकिन असाधारण समय में 'Reaction Time' शून्य होना चाहिए।



हनुमान, विभीषण, अर्जुन, और बुद्ध ने तत्काल निर्णय लिए।
चेतावनी: एक पल की देरी महान गौरव से वंचित कर सकती है।
(महात्मा ईसा: 'शीघ्र कार्य यदि बाएँ हाथ की पकड़ में आता है तो भी तुरंत पकड़ो...')

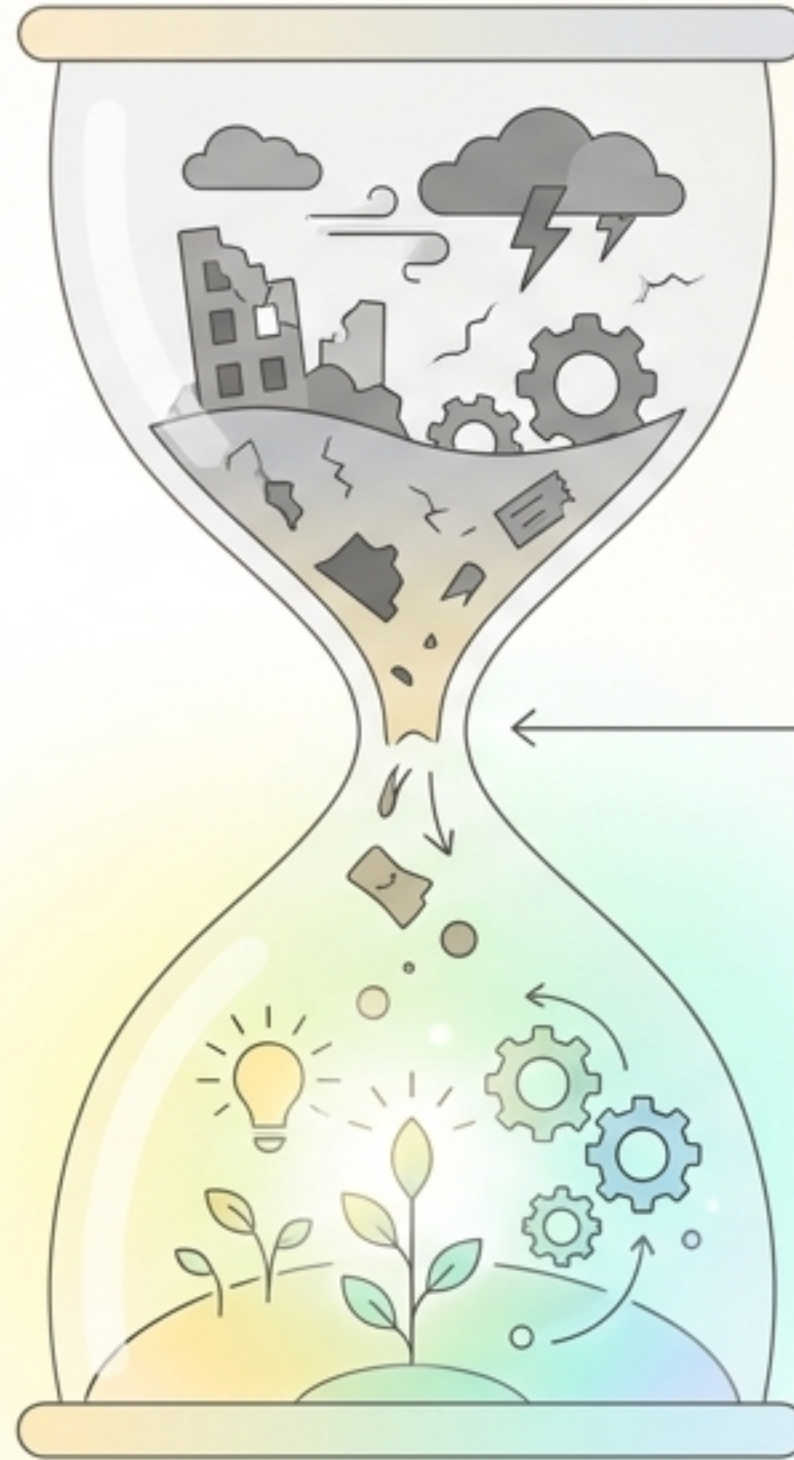
वसन्त पंचमी १९९० को वन्दनीया माताजी से — “मेरा ज्ञान शरीर ही जिन्दा रहेगा। ज्ञान शरीर का प्रकाश जन-जन के बीच में पहुँचना ही चाहिए और आप सबसे कहियेगा — सब बच्चों से कहियेगा कि मेरे ज्ञान शरीर को मेरे क्रान्तिधर्मी साहित्य के रूप में जन-जन तक पहुँचाने का प्रयास करें।” — पूज्य गुरुदेव युगऋषि वेदमूर्ति तपोनिष्ठ पण्डित श्रीराम शर्मा आचार्य (गायत्री परिवार के संस्थापक)

युग सन्धि की वेला: एक अभूतपूर्व ऐतिहासिक अवसर

वसन्त पंचमी १९९० को
वन्दनीया माताजी से —

“मेरा ज्ञान शरीर ही जिन्दा रहेगा।
ज्ञान शरीर का प्रकाश जन-जन के
बीच में पहुँचना ही चाहिए और
आप सबसे कहियेगा — सब बच्चों
से कहियेगा कि मेरे ज्ञान शरीर को
मेरे क्रान्तिधर्मी साहित्य के रूप
में जन-जन तक पहुँचाने का
प्रयास करें।”

— पूज्य गुरुदेव युगऋषि वेदमूर्ति
तपोनिष्ठ पण्डित श्रीराम शर्मा आचार्य
(गायत्री परिवार के संस्थापक)



बीसवीं सदी की विदाई: पुरानी व्यवस्थाओं,
कुरीतियों और अवांछनीयताओं का समापन।
सड़ी दुनिया का कूड़ा-करकट बुहारा जा रहा है
(जैसे होली/दिवाली की सफाई)।

वर्तमान क्षण (The Chokepoint)
मनुष्य जाति का भाग्य नए सिरे से लिखा जा
रहा है। उथल-पुथल का माहौल।

इक्कीसवीं सदी का अरुणोदय:
नए युग का जन्म (विचार क्रांति)।
परिणाम: जो जहाँ आज अपनी सक्रिय भूमिका
तय करेगा, भविष्य में वहीं स्थापित होगा।

छोटे अनुदानों का 'बटरफ्लाई इफेक्ट' (अतुलनीय प्रभाव)

वसन्त पंचमी १९१० को वन्दनीया माताजी से —

“मेरा ज्ञान शरीर ही जिन्दा रहेगा। ज्ञान शरीर का प्रकाश जन-जन के बीच में पहुँचना ही चाहिए और आप सबसे कहियेगा - सब बच्चों से कहियेगा कि मेरे ज्ञान शरीर को मेरे क्रान्तिधर्मी साहित्य के रूप में जन-जन तक पहुँचाने का प्रयास करें।”

— पूज्य गुरुदेव युगऋषि वेदमूर्ति तपोनिष्ठ पण्डित श्रीराम शर्मा आचार्य
(गायत्री परिवार के संस्थापक)

[छोटा अनुदान / श्रम] + [भगवान का सम्पुट / युग की आवश्यकता]
= [अमरता / असंख्य गुना प्रतिफल]

शबरी के बेर / गिलहरी का श्रम: रामकाज में तुच्छ साधन → दैवीय सम्पुट → इतिहास में अजर-अमर,
हनुमान का समर्पण: आड़े वक्त में प्राण-पण से सहायता → रामभक्तों से अधिक हनुमान उपासक

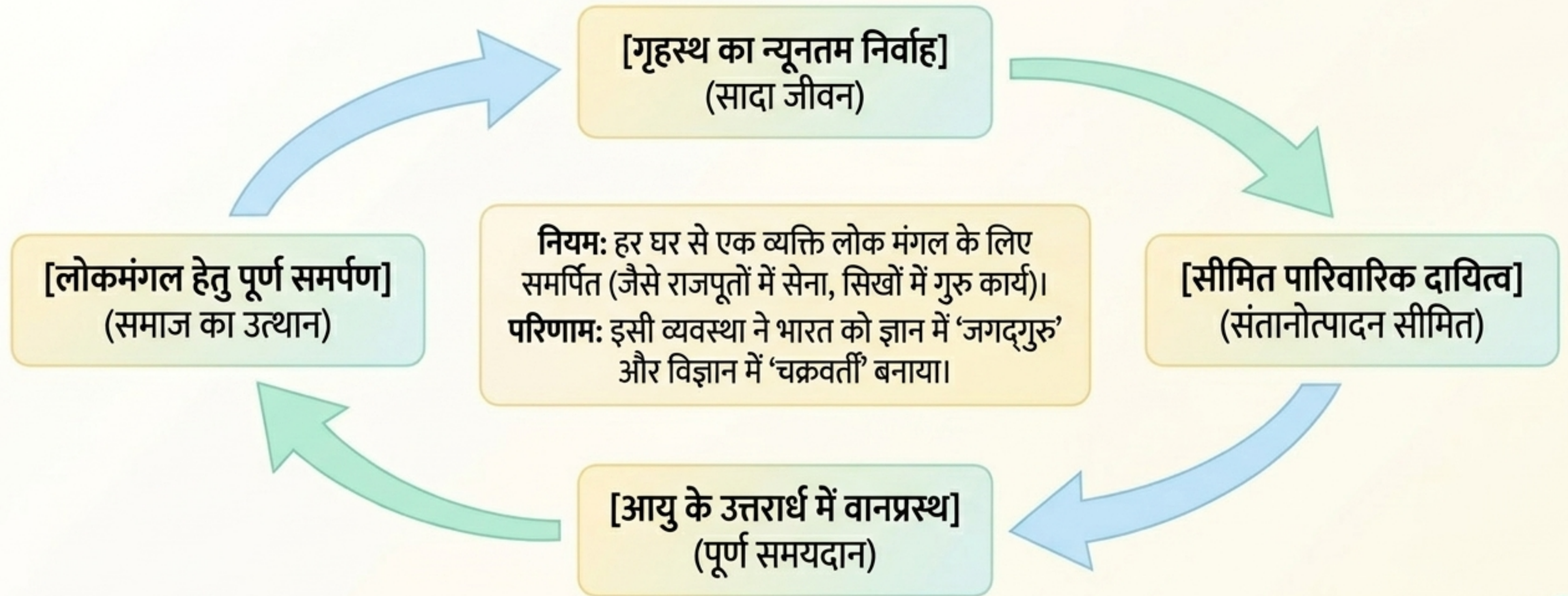
केंद्रीय विचार: सृष्टा की प्रचण्ड अभिलाषा है सड़ी दुनिया को बदलना (विचार क्रांति की लाल मशाल)।
इस दैवी उत्कंठा में छोटा सा योगदान भी असंख्य गुना फलित होता है।

समयदान ही 'महादान' क्यों है?



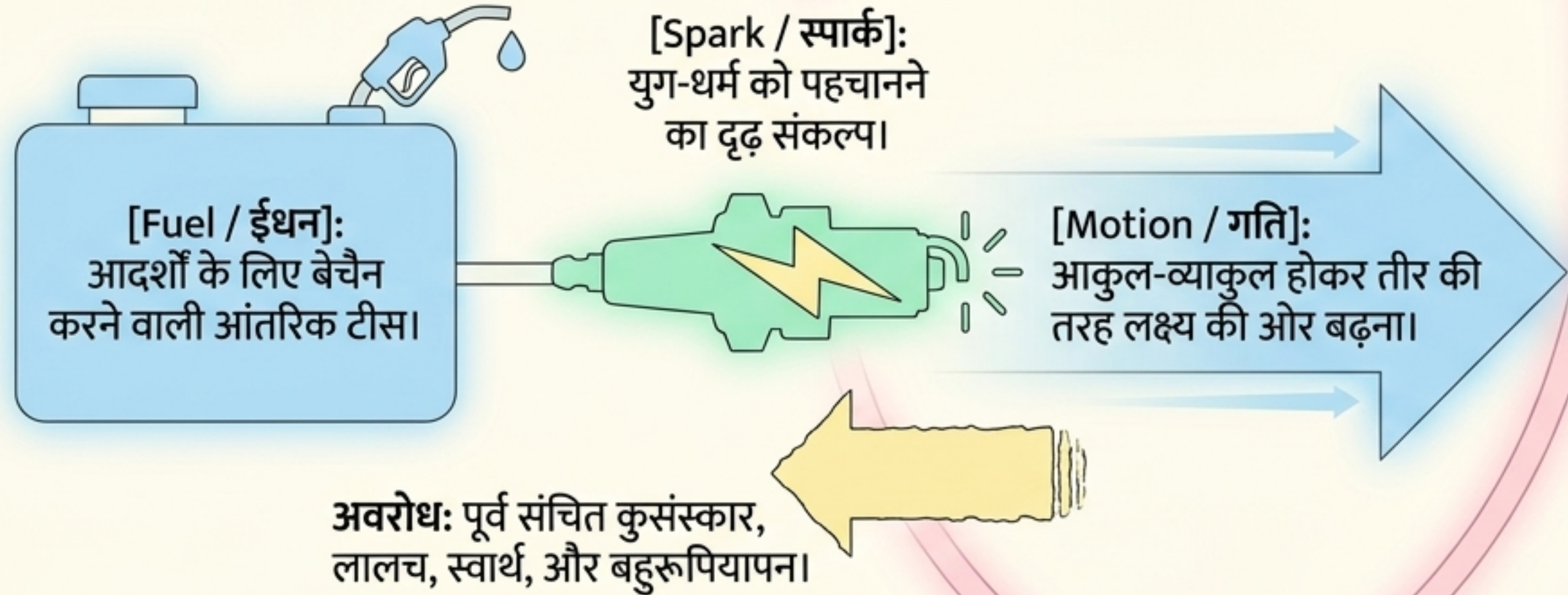
वसन्त पंचमी १९९० को वन्दनीया माताजी से — “मेरा ज्ञान शरीर ही जिन्दा रहेगा। ज्ञान शरीर का प्रकाश जन-जन के बीच में पहुँचना ही चाहिए और आप सबसे कहियेगा — सब बच्चों से कहियेगा कि मेरे ज्ञान शरीर को मेरे क्रान्तिधर्मी साहित्य के रूप में जन-जन तक पहुँचाने का प्रयास करें।” — पूज्य गुरुदेव युगऋषि वेदमूर्ति तपोनिष्ठ पण्डित श्रीराम शर्मा आचार्य (गायत्री परिवार के संस्थापक)

भारत का स्वर्णिम इतिहास: 'वानप्रस्थ' का सामाजिक पारिस्थितिकी तंत्र



वसन्त पंचमी १९९० को वन्दनीया माताजी से — “मेरा ज्ञान शरीर ही जिन्दा रहेगा। ज्ञान शरीर का प्रकाश जन-जन के बीच में पहुँचना ही चाहिए और आप सबसे कहियेगा — सब बच्चों से कहियेगा कि मेरे ज्ञान शरीर को मेरे क्रान्तिधर्मी साहित्य के रूप में जन-जन तक पहुँचाने का प्रयास करें।” — पूज्य गुरुदेव युगऋषि वेदमूर्ति तपोनिष्ठ पण्डित श्रीराम शर्मा आचार्य (गायत्री परिवार के संस्थापक)

समयदान का आंतरिक विज्ञान: आवश्यक 'आंतरिक टीस'



सुरक्षा कवच:

जब लक्ष्य के प्रति प्रेम सच्चा होता है, तो अवरोध 'मच्छर काटने' हैं।
बिना आंतरिक टीस के किया गया काम आधा-अधूरा छूट जाता है।

वसन्त पंचमी १९९० को
वन्दनीया माताजी से —

“मेरा ज्ञान शरीर ही
जिन्दा रहेगा। ज्ञान शरीर
का प्रकाश जन-जन के
बीच में पहुँचना ही
चाहिए और आप सबसे
कहियेगा — सब बच्चों
से कहियेगा कि मेरे ज्ञान
शरीर को मेरे क्रान्तिधर्मी
साहित्य के रूप में जन-
जन तक पहुँचाने का
प्रयास करें।”

— पूज्य गुरुदेव
युगऋषि वेदमूर्ति तपोनिष्ठ
पण्डित श्रीराम शर्मा आचार्य
(गायत्री परिवार के संस्थापक)

निष्कर्ष और आह्वान: आपकी भूमिका क्या है?

कदम 1: दृष्टि बदलें (Diagnosis)

भौतिक 'लेने' की होड़ छोड़कर 'देने' के शाश्वत नियम को अपनाएं।

कदम 2: प्रमाद त्यागें (Warning & Catalyst)

यह युग-सन्धि का असाधारण समय है। 'ट्रेन छूटने' से पहले तत्काल निर्णय लें।

कदम 3: समयदान का संकल्प (The Cure)

धन नहीं, अपनी ऊर्जा, प्रतिभा और समय का एक अंश नवसृजन (विचार क्रांति) के लिए समर्पित करें।

अंतिम सत्य:

महादानी वही है जो उत्कृष्टता को अपनाता है और र आदर्शों के लिए अपना सर्वस्व दाँव पर लगाता है।

वसन्त पंचमी १९९० को वन्दनीया माताजी से — “मेरा ज्ञान शरीर ही जिन्दा रहेगा। ज्ञान शरीर का प्रकाश जन-जन के बीच में पहुँचना ही चाहिए और आप सबसे कहियेगा — सब बच्चों से कहियेगा कि मेरे ज्ञान शरीर को मेरे क्रान्तिधर्मी साहित्य के रूप में जन-जन तक पहुँचाने का प्रयास करें।” — पूज्य गुरुदेव युगऋषि वेदमूर्ति तपोनिष्ठ पण्डित श्रीराम शर्मा आचार्य (गायत्री परिवार के संस्थापक)